

डॉ. डैनियल के. डार्को, लूका का सुसमाचार, सत्र 33, गिरफ्तारी और क्रूस पर चढ़ना, लूका 23

© 2024 डैन डार्को और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डैनियल के. डार्को द्वारा लूका के सुसमाचार पर दिए गए अपने उपदेश हैं। यह सत्र 33 है, गिरफ्तारी और क्रूस पर चढ़ना, लूका 23।

लूका के सुसमाचार पर बाइबिल ई-लर्निंग व्याख्यान श्रृंखला में आपका स्वागत है।

अब तक, हमने लूका के सुसमाचार में कई मुद्दों को कवर किया है, लेकिन विशेष रूप से, हमने लूका के सुसमाचार के पाठ का बारीकी से पालन किया है, हर पद और हर अध्याय पर ध्यान दिया है और हर पंक्ति को पढ़ा है। और यही हम इस सुसमाचार के अंत में आने पर करेंगे। कुछ लोगों ने कहा है कि शायद यूहन्ना का सुसमाचार सुसमाचार को दुनिया को बताने के तरीके में सबसे महत्वपूर्ण सुसमाचार है, अर्थात्, प्रभु यीशु मसीह के उद्धारक ज्ञान को।

दूसरों ने कहा है कि शायद मार्क हमें इस बात की संक्षिप्त समझ देता है कि मसीह क्या करने आया था और उसने हमारे लिए क्या कीमत चुकाई। मैं यह भी जोड़ सकता हूँ कि शायद ल्यूक हमें एक विवरण, सुसमाचार का एक पहलू प्रदान करता है जो यीशु ने जो किया उसे विस्तृत रूप से समझने के लिए बहुत महत्वपूर्ण और प्रासंगिक है। मार्क हमें यीशु की पीड़ा के नाटकीय तत्वों को दिखाता है, और इसलिए आप में से जो लोग पैशन ऑफ़ क्राइस्ट मूवी से परिचित हैं, उस मूवी का अधिकांश भाग मार्क के विवरण पर आधारित है ताकि पीड़ा की नाटकीय प्रकृति पर जोर दिया जा सके।

आज, हम लूका के सुसमाचार पर अंतिम लेकिन एक व्याख्यान में यीशु की गिरफ्तारी और क्रूस पर चढ़ने पर विचार करने जा रहे हैं। जब हम इस परीक्षण से गुजरेंगे, तो मैं जो कुछ करूँगा, वह यह है कि आपको मूल विवरण बताने के अलावा, जैसा कि लूका ने बताया है, मैं इस बात पर प्रकाश डालूँगा कि विभिन्न सुसमाचार लेखक इस विवरण को कैसे प्रस्तुत करते हैं, और फिर मैं कुछ ऐसी बातों पर भी जोर दूँगा जिन्हें लूका हमें बताने में बहुत खास है ताकि हम उस संदेश को समझ सकें जो वह थियोफिलस और उसके पाठकों में व्यापक दर्शकों को देने की कोशिश करता है। तो, आइए लूका अध्याय 22 से पढ़ना शुरू करें, यदि आप चाहें, तो लूका अध्याय 22 का अंत, वह पेरिकोप जो उस विशेष अध्याय को समाप्त करता है, श्लोक 54 से।

तब उन्होंने उसे पकड़ लिया, और ले जाकर महायाजक के घर में लाए, और पतरस दूर-दूर उसके पीछे-पीछे चला। जब उन्होंने आंगन के बीच में आग जलाई और इकट्ठे बैठ गए, तो पतरस भी उनके बीच में बैठ गया। तब एक दासी ने उसे उजियाले में बैठे देखकर और उसकी ओर ध्यान से देखकर कहा, यह मनुष्य उसके साथ था; परन्तु उस ने यह कहकर इन्कार किया, कि हे नारी, मैं उसे नहीं जानता।

थोड़ी देर बाद किसी और ने उसे देखकर कहा, तू भी उनमें से एक है। परन्तु पतरस ने कहा, हे मेरे प्रभु, मैं नहीं हूँ। कोई एक घंटे के अन्तराल के बाद किसी और ने दृढ़ता से कहा, निश्चय यह मनुष्य उसके साथ था, क्योंकि वह भी गलीली था।

पतरस ने कहा, “हे मनुष्य, मैं नहीं जानता कि तू क्या कह रहा है।” वह अभी बोल ही रहा था कि तुरन्त मुर्गे ने बाँग दी। और प्रभु ने मुड़कर पतरस की ओर देखा।

और पतरस को प्रभु की यह बात याद आई कि आज मुर्गे के बाँग देने से पहले उसने उससे कहा था, तू तीन बार मेरा इन्कार करेगा। और वह बाहर गया और फूट-फूट कर रोने लगा। यह विशेष वृत्तांत बहुत ही रोचक है क्योंकि हम धरती पर यीशु के अंतिम दिनों की घटनाओं से गुज़रते हैं।

एक साथी, एक शिष्य, जिसे उसने अनुसरण करने के लिए चुना था। सबसे करीबी सहयोगियों में से एक जो उसके साथ तब भी रहता था जब वह प्रार्थना करने के लिए पीछे हटता था। रूपांतरण के दिन उसके साथ रहने वाले सहयोगियों में से एक ने उसे अस्वीकार कर दिया।

शायद मुझे वह शब्द वापस ले लेना चाहिए: विश्वासघात। मुझे इनकार शब्द का उपयोग करने दें। लेकिन कौन सी घटनाएँ इसके लिए प्रेरित कर रही हैं? कहीं हम बहुत तेज़ी से आगे न बढ़ जाँएँ और पिछले व्याख्यानों से यह भूल न जाँएँ कि यीशु ने पतरस के बारे में क्या कहा था।

यीशु ने पतरस से कहा, अगर तुम्हें याद हो, तो शैतान उसे छानना चाहता था, लेकिन उसने उसके लिए प्रार्थना की थी। दूसरे शब्दों में, शैतान जो यहूदा को उसे धोखा देने के लिए उकसाएगा, उसे पतरस का इस्तेमाल करने और उसे गुमराह करने के लिए भी कहा गया था। लेकिन यीशु ने पहले के प्रवचन में उल्लेख किया कि उसने उसके लिए प्रार्थना की थी।

और फिर भी पतरस, एक इंसान होने के नाते, बाद में भी यीशु का अनुसरण करने की अपनी क्षमता पर अति आत्मविश्वास व्यक्त करने की कोशिश कर रहा था। कि किसी भी परिस्थिति में वह यीशु को निराश नहीं करेगा। लेकिन यीशु ने उसे याद दिलाया कि वह उसे जानने से इनकार कर देगा।

इसके लिए, उन्होंने प्रस्थान किया और कहा कि यह संभव नहीं होगा। यदि आप चाहें तो संक्षेप में कहें तो ऐसा नहीं हो सकता। पतरस के इनकार के इस वृत्तांत में, कुछ बातों का पता चलता है।

जब भोजन के बाद यीशु को गिरफ्तार किया गया और यहूदा ने चूमने का इशारा किया, तो वे उसे महायाजक के घर ले गए। यह दृश्य यरूशलेम में महायाजक के महल का था। कुछ सुसमाचार लेखकों ने इस महायाजक का नाम कैफा रखा है।

लूका ने नाम का उल्लेख नहीं किया है। अब, हम इस घटना को शाम को घटित होते हुए देखते हैं। अध्याय 22 के आरंभिक भाग में हमें बताया गया है कि वे फसह के लिए शाम को मिले थे, और उसकी गिरफ्तारी और सब कुछ शाम को ही घटित हुआ।

जब वे आंगन में आए, तो मौसम ठंडा होने लगा था, इसलिए उन्होंने हवेली के बीच में आग लगा दी। कुछ लोगों ने आग को घेर लिया, ताकि वे गर्म रहें, जबकि यीशु महायाजक द्वारा पूछताछ के लिए खड़े थे। हमें लूका ने बताया कि ऐसे मौकों पर जब यीशु पतरस की बात सुनने की दूरी पर था और जब पतरस और यीशु एक-दूसरे को अच्छी तरह से देख सकते थे, तो घटनाएँ वैसी ही होती थीं जैसी यीशु ने पतरस से भविष्यवाणी की थी। हम लूका के वृत्तांत में पाते हैं कि लूका हमें पतरस को एक शिष्य के रूप में चित्रित करना चाहता था।

लूका ने अनुसरण शब्द का प्रयोग किया। वह यीशु का अनुसरण करता था, वह शब्द जिसे वह वास्तव में शिष्यत्व पर जोर देने के लिए इस्तेमाल करना पसंद करता है। इसलिए, पतरस यीशु का अनुसरण करता था, लेकिन लूका यह भी चाहता है कि हम जानें कि वह एक शिष्य के रूप में उसका अनुसरण करता था, लेकिन वह हिचकिचाहट के साथ उसका अनुसरण करता था, इसलिए वह कुछ दूरी पर उसका अनुसरण करता था।

परिस्थितियाँ बहुत नाजुक और खतरनाक लग रही थीं। और इसलिए, पतरस, अपनी भलाई और सुरक्षा के लिए, एक अनुयायी बना रहा, लेकिन एक दूर का अनुयायी। कहीं ऐसा न हो कि हम सोचें कि पतरस बहुत कमजोर और बहुत असंवेदनशील था, मैं आपको याद दिला दूँ कि बाकी शिष्य इस दृश्य में नहीं थे, लेकिन इस समय केवल पतरस ही यहाँ है।

जब वह वहाँ गया, तो वह आस-पास के लोगों के साथ घुलमिल गया, जैसे कि ल्यूक हमें यह दिखाने की कोशिश कर रहा हो कि भीड़ के इकट्ठा होने के साथ, पीटर भी उसमें घुलने-मिलने की कोशिश कर रहा था ताकि किसी को पता न चले कि वह मौजूद है। क्या यह अच्छा नहीं था? आप जानते हैं, मैंने कभी-कभी छात्रों को यह याद दिलाने की कोशिश की है कि जब हम ल्यूक के सुसमाचार को पढ़ते हैं तो हमें पीटर को याद रखना चाहिए और खुद को उसके बारे में याद दिलाना चाहिए। हम शिष्यों के रूप में यीशु का अनुसरण करते हैं, लेकिन जब जीवन की परिस्थितियाँ खतरनाक होती हैं, तो हम कार्यस्थल पर, ऐसी जगह पर जहाँ यीशु का अनुयायी होने का दावा करना हमें लोकप्रिय नहीं बनाएगा या हमारा उपहास नहीं उड़ाएगा, हम उनसे इतनी दूरी बनाकर चलते हैं।

हम बस यही उम्मीद करते हैं कि लोग यह न जानें कि हम ईसाई हैं। पतरस भी कुछ ऐसा ही कर रहा था। जब वह भीड़ में शामिल हुआ, तो उसने वास्तव में सोचा कि वह अभी भी अपने स्वामी के साथ क्या हो रहा है, इस पर नज़र रख रहा है, लेकिन वह खुद को छिपाने में सक्षम था।

ओह, लेकिन लूका कहेगा कि पतरस ने गलत कहा। पतरस ने गलत कहा क्योंकि हम कुछ और ही देखेंगे। मैथ्यू और मार्क के सुसमाचार के विपरीत, जहाँ मुर्गे के बाँग देने से पहले पतरस ने तीन बार यीशु को अस्वीकार कर दिया था।

लूका में, ये सभी इनकार एक ही प्रांगण में होंगे। आपको पता होना चाहिए कि मत्ती और मरकुस में, कुछ इनकार प्रांगण के बाहर हुए थे। लूका में, तीनों एक ही प्रांगण में होंगे।

मैं बाद में लूका और अन्य तीन सुसमाचारों के बीच कुछ अंतरों पर प्रकाश डालूँगा, लेकिन मैं आपको इस तथ्य के बारे में भी याद दिलाना चाहता हूँ कि जब पतरस ने यीशु को जानने से इनकार किया, तो कुछ बातें ध्यान में रखनी चाहिए। एक, जब पतरस ने यीशु को जानने से इनकार किया, तो ऐसा लगा कि जब तक उसने यीशु से नज़रें नहीं मिलाईं, तब तक यह कोई मायने नहीं रखता। जब मुर्गा यीशु से नज़रें मिलाता है, तो वे दोनों जानते हैं कि यीशु ने पतरस की बात सुन ली है, और यह स्पष्ट है कि कुछ हुआ है।

और फिर, मेरे लिए, इन कहानियों में, सबसे महत्वपूर्ण शब्दों में से एक सामने आया, और उसे याद आया। स्मरण। पतरस, यीशु द्वारा सिखाई गई या बताई गई बातों को याद करके पश्चाताप के लिए मंच तैयार करने जा रहा है।

वह बाहर जाकर रोएगा। पतरस लड़खड़ा सकता था और यीशु को अस्वीकार कर सकता था, लेकिन वही पतरस याद रखेगा कि उसे क्या सिखाया गया था। उस आधार पर, वह पश्चाताप करेगा, वह रोएगा, वह अपना दुख व्यक्त करेगा, और हमें बताया गया है कि वह फूट-फूट कर रोया।

यह कड़वा रोना शर्म, पश्चाताप और पश्चाताप की अभिव्यक्ति हो सकती है। हाँ, उसने यीशु को अस्वीकार कर दिया, लेकिन इस आदमी में कुछ बदल रहा है। इससे पहले कि मैं यीशु के इनकार के बारे में कुछ बातों पर प्रकाश डालूँ, जो मुझे लगता है कि आप और अधिक जानना चाहते हैं, ताकि लूका में चल रही कुछ चीजों को वास्तव में समझ सकें, अन्य सुसमाचारों की तुलना में अधिक, मैं आपको लूका और अन्य सुसमाचारों के बीच एक समानता दिखाना चाहता हूँ।

लूका में, पतरस ने पहले एक छोटी लड़की के सामने यीशु को अस्वीकार किया, और फिर दूसरे व्यक्ति जिसके सामने उसने यीशु को अस्वीकार किया वह एक पुरुष था। और फिर लूका में तीसरा व्यक्ति एक पुरुष था। लेकिन मरकुस में अभिनेता कौन हैं? मरकुस कहता है कि पतरस ने वास्तव में दरबारियों के सामने तीन बार यीशु को जानने से इनकार किया।

लेकिन लूका के विपरीत, मार्क संकेत देता है कि सातवीं लड़की, या यदि आप इसका अनुवाद करना चाहें, तो दास, दासी ने उससे दो बार पूछा। तो, एक लड़की ने पतरस को दो बार यीशु को अस्वीकार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। और फिर तीसरी बार जब आप यीशु को अस्वीकार करेंगे, तो यह कुछ ऐसा होगा जो आस-पास खड़े लोगों के सवाल से प्रेरित होगा।

मैथ्यू में, अभिनेताओं को भी थोड़ा अलग तरीके से प्रस्तुत किया गया है। मैथ्यू में, यह सातवीं लड़की थी, और फिर एक अलग लड़की थी, और तीसरा दर्शक है। इसका मतलब यह है कि मैथ्यू में, दो महिलाएं पीटर से पूछती हैं कि क्या वह यीशु को जानता है, और पीटर यीशु को जानने से इनकार करता है।

आखिरकार, जो सामने आएगा वह यह है कि मार्क में, जब उसने इन दो लड़कियों के सामने यीशु को जानने से इनकार किया, तो आस-पास खड़े लोग बाद में आएंगे जब यीशु यार्ड में भी

नहीं थे। वहाँ, आस-पास खड़े लोग भी पूछेंगे कि क्या वह यीशु को जानता है, और वह यीशु को जानने से इनकार कर देगा। जॉन द्वारा अभिनेताओं का चित्रण काफी दिलचस्प है।

यूहन्ना में, यूहन्ना हमें बताता है कि पतरस ने यीशु को अस्वीकार किया, लेकिन यूहन्ना हमें यह भी स्पष्ट विवरण नहीं देता कि पतरस ने यीशु को तीन बार अस्वीकार किया या दो बार। क्योंकि यूहन्ना ने उन्हें केवल एक बार पतरस से यह पूछते हुए चित्रित किया है कि क्या वह यीशु को जानता है, और पतरस ने उस समय यीशु को जानने से इनकार कर दिया। और उसके बाद, यूहन्ना के अनुसार, महायाजक का एक सेवक भी पतरस से पूछता है कि क्या वह यीशु को जानता है।

और पतरस कहेगा कि उसने ऐसा नहीं किया। अब, ताकि आप इन बातों को लेकर भ्रमित न हों, मैंने आपका ध्यान उन पात्रों के अंतरों की ओर आकर्षित किया जो पतरस को यीशु को अस्वीकार करने के लिए प्रेरित करेंगे, सुसमाचारों में एक बहुत बड़ी विसंगति दिखाने के लिए नहीं, बल्कि आपको यह दिखाने के लिए कि शायद लूका, विशेष रूप से, एक नौकरानी लड़की को पहले अपमानजनक कृत्य दिखाने में रुचि रखता है, जहाँ एक वयस्क व्यक्ति, एक छोटी लड़की के सामने अपने जीवन के डर से, यीशु को जानने से इनकार कर देता है, जिसे वह मानता था, जो उसके जीवन के लिए इतना महत्वपूर्ण था। हम पाते हैं कि लूका ने यह दिखाकर पतरस को थोड़ा बचाने की कोशिश की कि एक नौकरानी लड़की के सामने यीशु को अस्वीकार करने के बाद, पतरस को पुरुषों द्वारा दो और मौके दिए जाएँगे, जिसके बाद वह यीशु को जानने से इनकार कर देगा।

यह वहाँ देखने लायक एक बहुत ही दिलचस्प बात है। लेकिन जो लोग बाइबल के छात्र या नए नियम के विद्वान या चर्च के सदस्य के रूप में इसका अनुसरण कर रहे हैं और अधिक जांच करने की कोशिश कर रहे हैं, मैं उनसे और अधिक खोज करने का आग्रह करना चाहता हूँ। यह उन विषयों में से एक है जिसके बारे में मैं आपसे और अधिक अध्ययन करने, और अधिक गहराई से जानने, यह पता लगाने का आग्रह करता हूँ कि मार्क और मैथ्यू और यहाँ तक कि जॉन की तुलना में ल्यूक में अभिनेता क्या भिन्न हैं।

मैंने तीन ऐसे उदाहरण दिए हैं, जिनके कारण इनकार हुआ। लेकिन लूका की बात पर वापस आते हुए, मैं आपका ध्यान लूका के उस चित्रण की कार्यक्रमिक प्रकृति की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ, जिसमें पतरस द्वारा यीशु को अस्वीकार करने का वर्णन किया गया है। लूका ने वास्तव में अपने विवरण में कुछ बहुत ही रोचक बातें कही हैं।

उन्होंने प्रस्तुत किया कि जब पतरस से पूछा गया कि क्या वह यीशु को जानता है, तो उसने युवती से कहा, मैं उसे नहीं जानता। लूका हमारा ध्यान इस तथ्य की ओर आकर्षित करता है कि पतरस ने वास्तव में उस घटना में यीशु को एक व्यक्ति, एकल के रूप में अस्वीकार कर दिया था। फिर, दूसरे उदाहरण में, जब एक व्यक्ति पतरस के पास आया, तो उस व्यक्ति ने वास्तव में इसे सामूहिक रूप से इस तरह से प्रस्तुत किया जैसे कि पतरस शिष्यों के एक समूह का सदस्य हो।

और इसलिए, उसने कहा, तुम भी उनमें से एक हो। तुम उन लोगों में से एक हो जो यीशु का अनुसरण करते हैं। यह विशिष्ट या खास यीशु से यीशु के समूह, यीशु के शिष्यों की ओर बढ़ता है, जिसके बारे में पतरस भी समूह से संबंधित होने से इनकार करेगा।

और फिर लूका हमें एक और चित्र देता है जिसमें तीसरा प्रश्न जो उस व्यक्ति से आया था, वह उसके क्षेत्र, उसकी पहचान, वह कहाँ से आता है, के बारे में पूछने वाला था। आप भी, आपको भी, आपको उनमें से एक होना चाहिए, उसकी पहचान, वह क्षेत्र जहाँ से वह आता है, को बुलाने के लिए उसके मूल का आह्वान करना चाहिए, और पतरस फिर भी इससे इनकार करेगा। दूसरे शब्दों में, यहाँ तक कि तीन बार, उसने यीशु को व्यक्तिगत रूप से जानने से इनकार कर दिया।

उसने यीशु के शिष्यों से संबंधित होने से इनकार किया। और उसने गलील से आने वाले व्यक्ति के रूप में अपनी पहचान के मूल को भी नकार दिया, जो यीशु और यहां तक कि व्यापक रूप से अन्य लोगों के साथ सामूहिक पहचान साझा करता था। महायाजक न्यायालय में, यह न केवल पतरस के लिए कॉर्क रोल से पहले तीन बार यीशु को जानने से इनकार करने का अवसर होने वाला था, बल्कि हमें यह भी बताया जाएगा कि यीशु को कुछ गंभीर उपहास से गुजरना होगा।

यहाँ, मैं आपको याद दिलाना चाहूँगा कि जब आप पद 61 या 63 से पढ़ते हैं, तो वे लोग जो यीशु को हिरासत में लिए हुए थे, उसे पीटते हुए उसका मज़ाक उड़ा रहे थे। उन्होंने उसकी आँखों पर पट्टी भी बाँधी और उससे पूछते रहे, भविष्यवाणी करो, वह कौन है जिसने तुम्हें मारा? और उन्होंने उसके खिलाफ़ कई अन्य बातें कहीं, उसकी निंदा की। यहाँ, मैं आपका ध्यान एक बहुत ही महत्वपूर्ण भूमध्यसागरीय सांस्कृतिक मुद्दे की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ।

गिरफ्तारी और सूली पर चढ़ाए जाने की कहानियों में, आप बार-बार मज़ाक शब्द सुनते हैं। अब, अगर हम अमेरिका में हैं, तो यह कोई बड़ी बात नहीं है। जैसा कि एक अलग विश्वविद्यालय में मेरे पूर्व छात्रों में से एक, जो एक पादरी है, पूर्वी अफ्रीका और पूर्वी अफ्रीकी देश से एक अफ्रीकी पादरी है, ने कहा, ओह, अमेरिका में, ऐसा लगता है कि उन्हें कोई शर्म नहीं है।

मैं उन्हें याद दिलाता हूँ कि यह कोई शर्मनाक संस्कृति नहीं है। यह बेशर्म संस्कृति है। यह आज़ादी की भूमि है और बहादुरों का घर है।

हम बस कुछ करते हैं। लेकिन आप देखिए, प्राचीन भूमध्यसागरीय संस्कृति में, सम्मान और शर्म की संस्कृति में, मज़ाक उड़ाना उतना ही नुकसानदेह हो सकता है जितना कि कोई आपको चाकू मार दे। किसी को शर्मिंदा करने के लिए सार्वजनिक रूप से उसका उपहास करना उसे मानसिक और भावनात्मक रूप से नष्ट कर सकता है।

यही कारण है कि आप ऐसे परीक्षणों की घटनाओं को देखते हैं जहाँ किसी का मज़ाक उड़ाने, उसका उपहास करने या उसे शर्मिंदा करने का लगातार प्रयास किया जाता है। क्योंकि शर्म ही वह कारण है जिसके कारण कोई व्यक्ति मरना चाहता है क्योंकि उसे सार्वजनिक रूप से शर्मिंदा किया गया है। दूसरे शब्दों में, यीशु के साथ जो किया जा रहा था वह उसे भीड़ के सामने सार्वजनिक रूप से नष्ट करना था।

और वे क्या करेंगे? जैसा कि हमें यहाँ बताया गया है, मज़ाक में शारीरिक मज़ाक भी शामिल होगा। वे उसकी आँखों पर पट्टी बाँध देंगे और उससे भविष्यवाणी करने को कहेंगे। वे, माफ़ करें, उसकी आँखों पर पट्टी बाँध देंगे, और फिर जब वे उसकी आँखों पर पट्टी बाँधेंगे, तो वे किसी को उसे पीटने के लिए बुलाएँगे।

और फिर वे कहेंगे, अगर तुम सच में आध्यात्मिक हो, अगर तुम सच में गलील से मसीहा हो, तो क्या तुम हमें बता सकते हो कि तुम्हें किसने पीटा? क्योंकि हमने तुम्हारी आँखों पर पट्टी बाँध दी है, और तुम उस व्यक्ति को नहीं देख सकते। और उसे सार्वजनिक क्षेत्र में पूरी तरह से अपमानित करने की कोशिश की गई है। आध्यात्मिक रूप से, यह लगभग उस सारे आध्यात्मिक उद्यम को कमज़ोर कर देता है, जिसके लिए परमेश्वर ने उसे उन चीज़ों को पूरा करने के लिए इस्तेमाल किया है, जो उसने की हैं, परमेश्वर के राज्य की घोषणा करना और लोगों के जीवन में परमेश्वर के राज्य को प्रभावी बनाना।

मौखिक रूप से, उन्होंने उसे गालियाँ दीं। उन्होंने तरह-तरह की बातें कहीं, जैसा कि लूका वहाँ लिखता है। उन्होंने उससे तरह-तरह की बातें कहीं।

दोस्तों, उसने ऐसा क्या किया कि उसे यह सब सहना पड़ा? उसने कुछ भी नहीं किया। उसे क्यों गिरफ्तार किया गया? उसके खिलाफ झूठे आरोप लगाए गए। हम जानते हैं कि यरूशलेम में अंतिम दिनों में, मंदिर में उसकी सेवकाई ने पहले ही बहुत सारी प्रतिक्रियाओं को जन्म दिया था, जैसा कि मैंने आपको अध्याय 20 में बताया था।

उसने कुछ भी गलत नहीं किया था। लेकिन इस समय, वे उसे मारने की कोशिश कर रहे थे। वे उसका मज़ाक उड़ाते हुए उसे मानसिक और भावनात्मक रूप से नष्ट करने की कोशिश कर रहे थे।

लेकिन फिर, आइए एक नज़र डालते हैं। महायाजक, मुख्य याजक के घर से, वे उसे महासभा में ले आएंगे। अगर आप चाहें तो उसने सारी रात मुख्य याजक के घर में बिताई है और इस यातना से गुज़रा है।

जब दिन हुआ, तो लोगों के पुरनियों की सभा, अर्थात् महायाजकों और शास्त्रियों ने इकट्ठे होकर उसे अपनी महासभा में ले जाकर पूछा, यदि तू मसीह है, यदि तू मसीह है, तो हमें बता। उसने उनसे कहा, यदि मैं तुम से कहूँ, तो तुम विश्वास नहीं करोगे। और यदि मैं तुम से पूछूँ, तो उत्तर नहीं दोगे।

परन्तु अब से मनुष्य का पुत्र परमेश्वर की सामर्थ्य के दाहिने हाथ बैठा रहेगा। तब सब ने कहा, तो क्या तू परमेश्वर का पुत्र है? उसने उनसे कहा, तुम कहते हो कि मैं हूँ। तब उन्होंने कहा, अब हमें और क्या गवाही चाहिए? यह तो हम ने स्वयं उसके मुँह से ही सुना है।

यीशु को महासभा में लाया गया। तो जल्दी से, मैं आपको याद दिला दूँ कि इस परिषद में क्या शामिल है। हमने परिषद के बारे में पढ़ा है और आपने महासभा के बारे में अधिक से अधिक सुना होगा।

लेकिन मैं आपको द्वितीय मंदिर यहूदी धर्म के विभिन्न समूहों से परिचित कराने का प्रयास करते हुए स्पष्ट करना चाहता हूँ। यहाँ जिस महासभा या परिषद की बात हो रही है, वह यहूदियों की सर्वोच्च धार्मिक परिषद है। यह विशेष समूह यहूदियों के धर्म और धार्मिक परंपराओं से संबंधित सभी प्रकार के कानूनों और विनियमों से निपटता था।

कानून तोड़ने वाले लोगों का फैसला किया जाता है, और उनकी धार्मिक संस्कृति से जुड़े मामलों का फैसला इस परिषद द्वारा किया जाता है। परिषद में एक समय में 23 या 71 सदस्य होते हैं। और अगर परिषद किसी शहर में है, जिसके कुछ शहरों में अपनी खुद की संहेद्रिन होगी, अगर आपको मिनी-संहेद्रिन पसंद है, तो धार्मिक मामलों पर फैसला करने वाले न्यायाधीशों के समूह में 23 लोग होंगे।

लेकिन सर्वोच्च परिषद, जो यरूशलेम में मिलने वाली महासभा है, वह वही होगी जिसके सामने यीशु को 71 बुजुर्गों और पुजारियों के साथ पेश किया जाएगा, जिसमें मुख्य पुजारी भी शामिल है जो निर्णय लेगा। वे आम तौर पर मंदिर में मिलते थे और धर्म के मामलों पर निर्णय लेते थे, चाहे यीशु यहूदी कानूनों का उल्लंघन कर रहे हों या नहीं। आपको पता होना चाहिए कि जहाँ तक हम उनके अस्तित्व की तिथि के बारे में जानते हैं, महासभा का संविधान 57 ईसा पूर्व में अस्तित्व में आया, जब रोमनों ने सत्ता संभाली। फिर, रोमनों ने इस शासन की स्थापना की और यहूदियों को अपने धार्मिक मामलों पर बहुत सारे निर्णय लेने के लिए कहा।

70 ई. के बाद, जब मंदिर नष्ट हो गया, तो संहेद्रिन का प्रभाव काफी कम हो गया। हालाँकि, द्वितीय मंदिर यहूदी धर्म के विद्वानों ने हमारा ध्यान इस तथ्य की ओर आकर्षित किया है कि वे अभी भी अस्तित्व में हैं, केवल 5वीं शताब्दी ई. तक उनकी शक्तियाँ सीमित थीं। यह समूह इस मायने में प्रभावशाली था कि इस समय सीमा में, चाहे वह रोमन कानून हो या प्रथागत नियम, अगर यहूदी धर्म से जुड़ी कोई बात सामने आती थी, तो यह परिषद तय करती थी कि लोगों ने कहाँ कानून तोड़ा है और फिर यह परिषद उचित दंड या उस विशेष मुद्दे को संबोधित करने के लिए आवश्यक कदम निर्धारित करती थी।

हम जिस महासभा को जानते हैं, वह यहूदियों के सब्त या विशेष त्योहारों को छोड़कर प्रतिदिन दिन में मिलती थी। यहीं पर आपको लूका के विवरण और अन्य सुसमाचार लेखकों के विवरण के बीच अंतर के बारे में पता होना चाहिए, जिन्होंने सुझाव दिया था कि परिषद रात में मिलती थी। हमारे पास यह सुझाव देने के लिए कोई ऐतिहासिक मिसाल नहीं है कि ये सर्वोच्च महासभा वास्तव में रात में मिलती थी।

हम जानते हैं कि जब तक कि इस विशेष अवसर पर, यह इतना शानदार और इतना असाधारण न हो कि वे यीशु के लिए मिलें। अन्यथा, वे दिन के समय मिलते थे, और वे आम तौर पर सब्त के दिन नहीं मिलते थे, लेकिन वे मंदिर के एक कक्ष में विशेष रूप से मिलते थे जो उन्हें वास्तव में उनकी बैठकों के लिए उपयुक्त लगता था। जब यीशु को महासभा में लाया गया, तो याद रखें कि उसे कई तरीकों से उपहास, मज़ाक और शर्मिंदगी के बाद मुख्य पुजारी के घर से महासभा में लाया गया था।

जैसा कि मैंने पहले पढ़ा, यीशु को महासभा के समक्ष कुछ आरोपों का सामना करना पड़ा। मार्क के विपरीत, मुझे ध्यान देना चाहिए कि महासभा के समक्ष उनकी उपस्थिति और मुकदमे में गवाह शामिल नहीं थे। मार्क अध्याय 14, श्लोक 56 से 59 में, हमें बताया जाएगा कि महासभा द्वारा यीशु पर मुकदमा चलाया जाएगा, और झूठे गवाह आएंगे जो यह गवाही देंगे कि यह वही व्यक्ति है जिसने कहा था कि वह मंदिर को नष्ट कर देगा और वह इसे फिर से बनाएगा और यह सब।

लूका उन गवाहों को बातचीत में नहीं लाता। यह मरकन के विवरण में है। पहला सवाल जो हम उसके सामने सेन्हेड्रिन में रखते हैं वह यह है कि वह मसीह है या मसीहा।

दूसरा सवाल यह होगा कि क्या वह ईश्वर का पुत्र है। दोनों ही मामलों में, वह अनिच्छुक उत्तर देता है। उत्तर पूरी तरह से संतोषजनक नहीं है, लेकिन ऐसा लगता है कि लूका के विवरण में, लूका हमें यह प्रस्तुत कर रहा है कि यह उन लोगों का समूह है जिन्होंने मुकदमे से पहले ही यीशु के साथ क्या करना है, इस बारे में अपना मन बना लिया था; उन्होंने औपचारिकताएँ शुरू कर दीं।

और इसलिए, ऐसा लगता है कि यीशु भी उनके साथ खेल रहे थे। ओह, तुम कहते हो कि परमेश्वर का पुत्र। ठीक है, मैं तुम्हें बता सकता हूँ कि तुम परमेश्वर के पुत्र की शक्ति का प्रकटीकरण देखोगे। और तुम कहते हो, ओह, तो तुमने अभी कहा कि तुम मसीहा हो? उसने कहा, नहीं, नहीं, नहीं, तुमने ऐसा कहा है।

यह आदान-प्रदान अस्थायी था, लेकिन इसका तात्पर्य यह था कि आदान-प्रदान एक ऐसा मुद्दा था जहाँ महासभा ने पहले ही तय कर लिया था कि वे उसके साथ क्या करना चाहते हैं। चूँकि उनके पास उसके खिलाफ़ मुकदमा चलाने और वैध मामले बनाने के लिए वैध आधार नहीं थे, इसलिए वे यह देखने के लिए आगे-पीछे जा रहे हैं कि क्या टिकेगा। अगर कुछ टिकेगा, तो वे इसे केंद्रीय आरोप के रूप में इस्तेमाल कर सकते हैं।

वे सूली पर चढ़ाकर मौत की सज़ा देने के लिए योग्य नहीं हैं। धार्मिक आधार पर, अगर मामला ईशानिंदा का है तो वे पत्थर मारकर मौत की सज़ा दे सकते हैं। लेकिन चूँकि वे सूली पर चढ़ाकर मौत की सज़ा देने के लिए सक्षम नहीं हैं, इसलिए वे इनमें से कुछ आरोपों पर मुकदमा चलाने की कोशिश करेंगे।

अगर वे ऐसा करते हैं, तो वे उन्हें पिलातुस के पास ले जाएंगे, और अंततः पिलातुस ही फैसला करेगा क्योंकि पिलातुस शहर में है। याद रखें, यह फसह का पर्व है। पिलातुस का महल मुख्य रूप से कैसरिया में है।

लेकिन वह त्यौहारों के दौरान यरूशलेम में अपने छोटे से स्थान पर आता है, जिसके लिए वह यहूदियों के साथ इस घटना को मनाने के लिए शामिल होगा। वहाँ, वह यहूदियों को भी खुश करेगा, क्योंकि वे अपनी पसंद के एक या दो लोगों को इस फसह में भाग लेने के लिए क्षमा करेंगे, जिसमें परमेश्वर द्वारा अपने लोगों को मिस्रियों की कैद या दासता से मुक्त करने का जश्न मनाया जाता है। अब 23 से शुरू हो रहा है।

हम यहाँ देखते हैं कि उनकी पूरी मंडली उठकर उसे पिलातुस अर्थात् महासभा के सामने ले गई। वे उस पर दोष लगाने लगे, और कहने लगे, कि हमने इस मनुष्य को हमारे लोगों को गुमराह करते, कैसर को कर देने से मना करते, और अपने आप को मसीह, राजा कहते हुए पाया है। तब पिलातुस ने उससे पूछा, क्या तू यहूदियों का राजा है? उसने उत्तर दिया, तू ने ऐसा ही कहा है।

तब पिलातुस ने महायाजकों और क्रूस से कहा, “मैं इस मनुष्य में कोई दोष नहीं पाता। परन्तु कुछ लोग कहते थे कि यह सारे यहूदिया और गलील में, वरन यहां तक कि यहां तक उपदेश देकर लोगों को भड़काता है।” जब पिलातुस ने यह सुना, तो उसने पूछा, क्या यह मनुष्य गलीली है?

और जब उसने जाना कि वह हेरोदेस के अधिकार क्षेत्र का है, तो उसने उसे हेरोदेस के पास भेजा, जो उस समय यरूशलेम में था। जब हेरोदेस ने यीशु को देखा, तो वह बहुत खुश हुआ, क्योंकि वह उसे देखने के लिए बहुत समय से तरस रहा था क्योंकि उसने उसके बारे में सुना था और उसे देखने की उम्मीद कर रहा था, ताकि वह कुछ चमत्कार कर सके। इसलिए, उसने उससे कुछ देर तक पूछा, लेकिन उसने कोई जवाब नहीं दिया।

महायाजक और शास्त्री खड़े होकर उस पर कड़ा दोष लगा रहे थे। और हेरोदेस ने अपने सिपाहियों समेत उसका अपमान किया और उसका उपहास किया। फिर उसे सुन्दर वस्त्र पहनाकर पिलातुस और हेरोदेस के पास भेज दिया।

और उसी दिन पिलातुस एक दूसरे के मित्र बन गए। इस दिन से पहले, वे एक दूसरे के साथ दुश्मनी में थे। जल्दी से, यहाँ किए जाने वाले अवलोकनों का एक हिस्सा यह है कि यीशु को पिलातुस के पास लाया गया, जो त्योहार के कारण शहर में था, और उसके खिलाफ स्तर तीन के आरोप थे।

पहला, उन्होंने कहा कि यीशु वास्तव में पूरे राष्ट्र को गुमराह कर रहा था। दूसरा आरोप, उसके खिलाफ लगाया गया स्तर, यह था कि वह लोगों को कैसर को कर देने से मना कर रहा था। और तीसरा, उन्होंने कहा कि वह यहूदियों का राजा होने का दावा कर रहा है।

किसी को यह ध्यान रखना चाहिए कि रोमन अधिकारी के सामने लगाए गए इन आरोपों के गंभीर निहितार्थ हैं। उन्होंने इन आरोपों को अज्ञानता के आधार पर नहीं लगाया। उन्होंने इसे इसलिए लगाया क्योंकि अगर यीशु पूरे देश को गुमराह कर रहा है, तो वह रोमन न्यायशास्त्र की संरचनाओं और उन संरचनाओं को कमजोर कर रहा है जिन्हें रोमनों ने यह सुनिश्चित करने के लिए स्थापित किया था कि इस जगह पर शांति बनी रहे।

अगर वह लोगों को कर देने से मना करता है, तो यह रोम में सीज़र का अपमान है और इसलिए, भाग्य का फैसला करने का काम पिलातुस के हाथों में है क्योंकि यह धार्मिक मामला नहीं है। अगर वह यहूदियों का राजा होने का दावा करता है, तो वह सीज़र का सहायक होने का दावा कर रहा है, लेकिन वह राजा की जगह लेने की कोशिश कर रहा है। गंभीर आरोप।

क्या वे किसी भी आधार पर हैं? नहीं। वास्तव में, सबसे करीबी अध्याय 20 में है, जब यीशु से पूछा गया और उसे सिक्का दिया गया, अगर आपको याद हो जब उनसे यह समझाने के लिए कहा गया था कि उन्हें कैसर को कर देना चाहिए या नहीं, और उन्होंने इसे अच्छी तरह से समझाया, जैसा कि मैंने इस व्याख्यान श्रृंखला में विस्तार से बताया है। यीशु ने ल्यूक के सुसमाचार में कहीं भी ऐसा नहीं कहा कि लोगों को कैसर को अपना कर नहीं देना चाहिए, लेकिन यह उसके खिलाफ बनाया गया था।

क्या उसने यहूदियों का राजा होने का दावा किया था? दूसरों ने कुछ ऐसा कहा जिसका उसने खंडन नहीं किया। उसने संकेत दिया कि शायद मसीहा की यहूदी अपेक्षा उसके काम में प्रकट हो रही है, लेकिन उसने खुद को इन आरोपों के लायक बनाने के लिए उसमें कोई बदलाव नहीं किया। लेकिन ये आरोप अच्छी तरह से गढ़े गए थे क्योंकि अगर आप न्यायशास्त्र और यहाँ दांव पर लगे मुद्दों को नहीं समझते हैं, तो यह यहूदी धार्मिक मामलों को निपटाने में बाधा है।

उन्हें ऐसे आरोप तय करने की ज़रूरत है जो व्यापक नागरिक और आपराधिक मुद्दे हों और रोमन प्रीफेक्ट के डेस्क पर जाएँ ताकि वह फैसला ले सके। यह एक अच्छी कोशिश है, लेकिन वे टिक नहीं पाएँगे। पिलातुस उल्लेख करेगा कि वे जो आगे ला रहे हैं उसमें उसे ज़्यादा कुछ नहीं मिलेगा।

प्रीफेक्ट के रूप में, यह स्पष्ट है कि पिलातुस के पास शक्तियाँ हैं, जिसे लैटिन अभिव्यक्ति *ius gladi* में मृत्युदंड जारी करने की शक्तियाँ कहा जाता है, और वे मृत्युदंड लागू करने के लिए पिलातुस से अपील करने के लिए ये सब कर रहे थे। लेकिन पिलातुस ने तीन मौकों पर कहा कि उसे ऐसा कोई सबूत नहीं मिला जो यीशु के खिलाफ लगाए गए आरोपों से मेल खाता हो। इसलिए, यह न जानते हुए कि सैन्हेड्रिन के सदस्यों के साथ इस आदान-प्रदान के दौरान क्या करना है, पिलातुस एक आसान रास्ता खोजने की कोशिश कर रहा था, और उसने उनसे कहा कि उसने गलील में भी हंगामा मचाया और ये सब बातें सिखाईं।

उसने कहा ओह हाँ, तुमने गलील का ज़िक्र किया। क्या यह संभव है कि यह ईश्वर की ओर से हो? उसने कहा हाँ, ठीक है, तो हेरोदेस शहर में है। हेरोदेस ही गलील का प्रभारी है। इसलिए, उसे हेरोदेस के पास भेजो और देखो कि क्या हेरोदेस उस मुद्दे को संबोधित कर सकता है।

पिलातुस ने पहले ही कह दिया है कि उसे इस आदमी में कोई दोष नहीं दिखता। लेकिन लोगों का कहना है कि उन्हें नहीं पता था कि जब उन्होंने गलील का ज़िक्र किया तो वे उसे छूट दे रहे थे। इसलिए, अब वह कहता है, उसे हेरोदेस के पास भेज दो।

खैर, हम जानते हैं कि हेरोदेस यीशु को देखकर बहुत खुश था क्योंकि उसने गलील में यीशु की सेवकाई के बारे में सुना था और उसे देखने की उम्मीद कर रहा था, यहाँ तक कि उसे उम्मीद थी कि यीशु उसके लिए कुछ चमत्कार करेगा। लेकिन इस दिन कुछ और भी हो रहा है जो मुझे भावुक कर देता है अगर मैं मंच पर हूँ। इस दिन जब ट्रियर की औपचारिकताएँ चल रही थीं, जब पतरस के इनकार से याद और इसलिए पश्चाताप होने वाला था, हम यह भी देखने जा रहे हैं कि दो धर्मनिरपेक्ष नेता जिनके बीच अच्छे संबंध नहीं थे, अब यीशु के कारण दोस्त बनने जा रहे हैं।

मैं तुम्हें बताता हूँ कि यहाँ क्या चल रहा था। हेरोदेस सत्ता के पीछे पागल था। उसे सत्ता पसंद थी।

लेकिन पिलातुस हेरोदेस की शक्ति को मान्यता नहीं देना चाहता था। इसलिए, पिलातुस को हेरोदेस के साथ इस समय तक समस्याएँ थीं। इसलिए, पिलातुस द्वारा हेरोदेस को मामला सौंपना हेरोदेस की स्थिति को वैध ठहराना है।

यदि आप हेरोदेस हैं, तो आप एक बार पॉंटियस पिलातुस के गुलाबी रंग के बारे में बात कर रहे हैं। याद रखें कि हेरोदेस का मूल इदुमी है, जो फिलिस्तीन से होने का दावा करता है। पिलातुस रोम का प्रत्यक्ष दूत है।

और यह तनाव लंबे समय से मौजूद है। लेकिन अब पिलातुस यीशु को हेरोदेस के पास भेजता है। वहाँ, हम देखेंगे कि हेरोदेस को भी यीशु के खिलाफ़ कोई खास मामला नहीं मिलता।

इसलिए उसके सैनिक यीशु का मज़ाक उड़ाने, सार्वजनिक रूप से उसका मज़ाक उड़ाने, उसे और अधिक मानसिक यातना देने और यीशु को पिलातुस के पास वापस भेजने के लिए उसके सैनिकों के साथ मिल जाएँगे। यहाँ जो हो रहा है वह यह है। लूका कह रहा है कि इससे पहले कि हम सभी लोगों पर दोष मढ़ने की कोशिश करें, यह नेता हैं जो यीशु को पकड़ने के लिए हैं, सभी नहीं।

अन्य सुसमाचारों के विपरीत, जहाँ आप बाकी लोगों को यीशु को गिरफ्तार करने और सूली पर चढ़ाने के लिए चिल्लाते और रोते हुए पाते हैं। और ल्यूक, यह सब आयोजन नेताओं से, महायाजक के घर से लेकर महासभा तक आ रहा है। महासभा ने सिखाया कि सामान्य परिस्थितियों में, आप एक अपराधी या किसी ऐसे व्यक्ति को जो पिलातुस के पास लाने के योग्य है, उसके पास भेजना चाहते हैं।

आपको पूरी महासभा की जरूरत नहीं है। लूका कहता है कि पूरी महासभा यीशु को छुड़ाने के लिए पिलातुस के महल में चली गई। उसे कुछ भी नहीं मिला।

वे चिल्लाने लगे। उसने कहा, हेरोदेस के पास जाओ। हेरोदेस खुश हुआ।

उसने यीशु से कहा कि हम चमत्कार करने जा रहे हैं। उसने यीशु से कई सवाल पूछे। यीशु ने कोई आपत्ति नहीं की।

इसलिए, वे उसका और अधिक मज़ाक उड़ाते हैं। वे हँसते हैं। वे उसका अपमान करते हैं और उसे वापस पिलातुस के पास भेज देते हैं।

दो बातें। पहली बात तो यह कि पिलातुस को यीशु में कोई दोष नहीं मिला। दूसरी बात यह कि हेरोदेस को यीशु में कोई दोष नहीं मिला।

यहाँ तक कि यहूदी नेता भी जो यीशु में दोष ढूँढ़ने की कोशिश कर रहे थे, वे बस कोशिश कर रहे थे। उन्होंने यह देखने की कोशिश की कि क्या बात उनके मन में बैठती है, लेकिन अध्याय 23 की आयत 13 से बातें मन में नहीं आ रही थीं।

लेकिन सबने ऐसा किया, सबने ऐसा किया, लेकिन सबने एक साथ चिल्लाते हुए कहा, इस आदमी को मार डालो, और हमारे लिए बरअब्बा को छोड़ दो, एक आदमी जिसे विद्रोह के लिए जेल में डाल दिया गया था, शहर में हकलाता था, और हत्या के लिए। पिलातुस ने एक बार फिर उनसे बात की और यीशु को रिहा करने की इच्छा जताई। लेकिन वे चिल्लाते रहे, उसे क्रूस पर चढ़ाओ, उसे क्रूस पर चढ़ाओ।

उस समय उसने उनसे पूछा कि क्यों? उसने क्या बुरा किया है? मैंने उसमें मृत्युदंड के योग्य कोई दोष नहीं पाया है। इसलिए मैं उसे दण्डित करके छोड़ दूंगा। लेकिन कुछ एजेंट प्रभु मसीह से मांग कर रहे थे कि उसे सूली पर चढ़ा दिया जाए।

और उनकी आवाज़ें प्रबल हुईं। इसलिए, पिलातुस ने फैसला किया कि उनकी मांग मान ली जानी चाहिए। और उसने उस आदमी को रिहा कर दिया जिसे विद्रोह और हत्या के लिए जेल में डाल दिया गया था।

और जिसके लिए उन्होंने प्रार्थना की, परन्तु उसने यीशु को उनकी इच्छा के अनुसार सौंप दिया। जब वे उसे ले जा रहे थे, तो उन्होंने शमौन नामक कुरेनी को जो देहात से आ रहा था, पकड़ लिया, और उस पर क्रूस लाद दिया, कि वह उसे यीशु के पीछे-पीछे ले चले। और उसके पीछे बहुत से लोग और स्त्रियाँ थीं जो उसके लिये विलाप और विलाप करती हुई चल रही थीं।

लेकिन यीशु ने उनकी ओर मुड़कर कहा, "यरूशलेम की बेटियों, मेरे लिए मत रोओ, बल्कि अपने और अपने बच्चों के लिए रोओ। क्योंकि देखो, ऐसे दिन आ रहे हैं जब लोग कहेंगे, धन्य हैं वे जो बांझ हैं, और वे गर्भ जो कभी नहीं जन्मे, और वे स्तन जो कभी नहीं बसे। तब वे पहाड़ों से कहने लगेंगे, हमारे पीछे आओ, और पहाड़ियों से, हमें ढक लो।

यदि वे लकड़ी के साथ ऐसा करते हैं, जब लकड़ी हरी होती है, तो जब वह सूखी होती है तो क्या होगा? मैं आपको जल्दी से यहाँ होने वाली कुछ चीजों के बारे में बताता हूँ। यीशु को मृत्युदंड दिया गया, न कि उसके द्वारा किए गए गलत कामों के लिए। लेकिन अन्य सुसमाचार लेखकों की तरह विस्तार से बताए बिना, लूका ने हमें अभी-अभी बताया था कि पिलातुस फसह के उत्सव के हिस्से के रूप में दर्शकों को खुश करने के लिए जेल में बंद एक व्यक्ति को माफ़ करने वाला था।

और दर्शकों ने दंगा और हत्या के लिए जिम्मेदार व्यक्ति को जाने देने और यीशु को मार डालने का विकल्प चुना था। क्या आप ऐसे माहौल में रहे हैं जहाँ आपको पता हो कि निर्दोष को जेल भेजा जा रहा है, और दोषी को समाज में वापस छोड़ा जा रहा है? यीशु उस कोरस में थे, और उन्होंने उन्हें सूली पर चढ़ाने के लिए चिल्लाया। और क्योंकि पिलातुस का रिवाज़ है कि लोगों की माफ़ी के लिए एक व्यक्ति को रिहा किया जाए, इसलिए उसने यीशु को रिहा कर दिया।

हम यहाँ पाते हैं कि पिलातुस तीन बार दोहराता है कि यीशु निर्दोष है, लेकिन यह पर्याप्त नहीं होगा। क्षमा के लिए सार्वजनिक विकल्प बरब्बास है न कि यीशु। यहाँ साइरेन से एक यहूदी साइमन आता है, जो उत्तरी अफ्रीका में प्रवासी के रूप में रहता था।

दरअसल, मार्क हमें अपने बच्चों के नाम याद दिलाता है। उन्होंने उसे देखा जब वे यीशु को क्रूस पर चढ़ाने के लिए ले जा रहे थे। और वे कहते हैं, यहाँ एक अफ्रीकी आ रहा है, चलो उसे पकड़ लें।

मेरा मतलब है, आप जानते हैं कि मैं कहाँ जा रहा हूँ क्योंकि मैं अफ्रीकी हूँ। यह एक यहूदी है जो उत्तरी अफ्रीका में प्रवासी के रूप में रहता था। आप जानते हैं, मैं यह उल्लेख करना पसंद करता हूँ कि जब भी हम अफ्रीकियों और अफ्रीकियों की किसी भी परेशानी के बारे में सोचते हैं, तो इस वृत्तांत के बारे में ल्यूक के चित्रों में से एक यह दिखाने की कोशिश करना है कि यीशु की महिला शिष्याएँ थीं, और साइरेन का साइमन यीशु का शिष्य बन गया, जो क्रूस पर चढ़ाए जाने के स्थान पर अपना क्रूस लेकर जाएगा।

इसलिए जब यीशु को सूली पर चढ़ाने का इरादा रखने वालों ने सोचा कि वे साइरेन के शमौन को बुरी स्थिति में डाल रहे हैं, तो उन्हें शायद ही पता था कि वे उसे सम्मान के स्थान पर डाल रहे थे, जो दुनिया के उद्धारकर्ता को क्रूस पर चढ़ाए जाने के रास्ते पर गिरने से बचाएगा, अतिरिक्त दर्द और भारीपन को सहन करेगा। शमौन को मजबूर किया गया था; कृपया गलत मत समझिए कि मैं यहाँ क्या कहना चाहता हूँ; शमौन ने स्वेच्छा से क्रूस उठाने के लिए नहीं कहा था। उसे ऐसा करने के लिए मजबूर किया गया था, लेकिन पीछे मुड़कर देखने पर, यह एक विशेषाधिकार होगा।

साइमन और वह महिला लूका के योग्य नहीं होंगे। लूका उन महिलाओं के साथ हुई घटना को उजागर करने में बहुत रुचि रखते हैं जिन्हें समाज में बहिष्कृत माना जाता है। लूका उल्लेख करता है कि क्रूस के रास्ते पर, यीशु का अनुसरण करने वाली महिलाएँ होंगी, और ये महिलाएँ दुःख में थीं; वे अपनी छाती पीट रही थीं, और वे ऊँची आवाज़ में विलाप कर रही थीं।

यीशु इस महिला की बात सुनते हैं, और ल्यूक हमें बताता है कि क्रूस के रास्ते पर भी, यीशु उन बहिष्कृत लोगों पर ध्यान देंगे जो उनका अनुसरण कर रहे हैं। यीशु महिलाओं की देखभाल करेंगे; उनके लिए शोक करने या उनके लिए दुखी होने के बजाय, वह उन्हें सांत्वना देंगे और भविष्यवाणी के शब्दों में उनके भाग्य के बारे में भी बताएंगे। वह उन्हें अवगत कराएंगे कि समय आ रहा है, कि यह यरूशलेम की बेटियों के लिए अच्छा नहीं होने वाला है, और यरूशलेम की बेटियाँ खुद के लिए रोना पसंद करेंगी क्योंकि यह बहुत बुरा होगा, यह उनके लिए बहुत बुरा होगा।

यीशु, क्रूस के मार्ग पर, एक उद्धारकर्ता, एक प्रोत्साहनकर्ता बन रहे हैं, जो साइरेन के साइमन द्वारा अनुसरण किए जाने के योग्य हैं। यदि आप यरूशलेम में उस दृश्य में एक अप्रत्याशित व्यक्ति को पसंद करते हैं, तो जिन महिलाओं से अनुसरण करने का साहस होने की उम्मीद नहीं की जाती है, वे अनुसरण करने वाली होंगी, और हम देखेंगे कि यीशु उन्हें बताएंगे कि यरूशलेम

के लिए यह इतना बुरा होगा कि लोग मरना चाहेंगे, और फिर भी मृत्यु नहीं आएगी। यरूशलेम सभी प्रकार की कठिनाइयों से गुजरने वाला है, लेकिन यरूशलेम की बेटियों को समय से पहले ही इसके बारे में पता होना चाहिए और आश्चर्यचकित नहीं होना चाहिए, जितना कि वह उनके लिए उनके शोक की सराहना करता है।

जब ये सब हो रहा था, हमें बताया गया कि जब वे घटनास्थल पर आए, तो दो अन्य अपराधी भी उसके साथ मृत्यु दंड के लिए ले जाए गए। ध्यान दें कि लूका ने उल्लेख किया है कि निर्दोष लोगों को दो अन्य अपराधियों के पास लाया गया था, जैसे कि वे अकेले जुलूस में थे, और उन्हें उसके साथ उस स्थान पर लाया गया था। जब वे उस स्थान पर पहुँचे जिसे खोपड़ी कहा जाता है, तो उन्होंने उसे और अपराधियों को, एक को उसके दाहिने और एक को उसके बाएं तरफ क्रूस पर चढ़ाया, और यीशु ने कहा, हे पिता, उन्हें क्षमा कर, क्योंकि वे नहीं जानते कि वे क्या कर रहे हैं, और उन्होंने उसके वस्त्रों को बाँटने के लिए चिट्ठियाँ डालीं, और लोग खड़े होकर देख रहे थे, लेकिन सरदार ने उसका उपहास करते हुए कहा, उसने दूसरों को बचाया, उसे खुद को बचाने दो, अगर वह मसीहा, परमेश्वर का मसीह, उसका चुना हुआ है।

सिपाहियों ने भी उसका ठट्ठा किया, और उसे कष्टदायक मदिरा पिलाकर कहा, यदि तू यहूदियों का राजा है, तो अपने आप को बचा। उसके ऊपर एक और लिखा हुआ था, कि यह यहूदियों का राजा है। तब जो अपराधी फाँसी पर लटकाए गए थे, उन में से एक ने उस पर निन्दा करके कहा, क्या तू मसीह नहीं है? अपने आप को और हमें बचा। परन्तु दूसरे ने उसे डाँटकर कहा, क्या तू परमेश्वर से नहीं डरता? क्योंकि तू और हम दोनों ही दण्ड के भागी हैं, और हम भी न्याय के भागी हैं, क्योंकि हम अपने कामों का ठीक फल पा रहे हैं; पर इस ने कोई अनुचित काम नहीं किया; और कहने लगा, हे यीशु, जब तू अपने राज्य में आए, तो मेरी सुधि लेना। तब उस ने उस से कहा, मैं तुझ से सच कहता हूँ, कि आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा।

अब लगभग छठा घंटा हो चुका था, और नौवें घंटे में पूरे देश में अँधेरा छा गया। जब सूर्य का प्रकाश मंदिर के पर्दे को फाड़कर दो टुकड़े कर रहा था, तब यीशु ने ऊँची आवाज़ में पुकारा, पिता, मैं अपनी आत्मा को आपके हाथों में सौंपता हूँ, और यह कहकर, उन्होंने क्रूस के रास्ते में अपनी अंतिम साँस ली। ल्यूक ने गुलगुता शब्द को छोड़ दिया है, और वह लोहबान के साथ मिश्रित शराब के बारे में बात नहीं करता है, लेकिन मैं चाहता हूँ कि आप यह जान लें कि उसे जो कड़वा पेय पेश किया गया था, वह उसका मज़ाक उड़ाने का एक तरीका था, जैसे कि यह कहना कि, यदि आप राजा हैं, तो यह सबसे बढ़िया शराब है जो हम आपको दे सकते हैं, बस उसका मज़ाक उड़ाने के लिए। मार्क की तरह अन्य सुसमाचारों में, उन्होंने उसकी पुकार को शायद उसकी प्यास समझ लिया और उसे कुछ पीने को देने की कोशिश की।

आप देखिए, क्रूस पर भविष्यवाणी करने वाले यीशु प्रार्थना करेंगे कि परमेश्वर उनके हत्यारों को उनकी अज्ञानता के लिए क्षमा करे, लेकिन यहाँ लूका में, लूका इस क्रूस पर चढ़ाए जाने के दृश्य में अरामी शब्दों का उपयोग नहीं करता है। लूका हमें बताता है कि इस विवरण में कई प्रत्यक्षदर्शी थे, फिर भी वह मार्क में एलोहिम, एलोहिम, लेमा सबाकथानी जैसे भावों को छोड़ देता है। वह गोलगोथा जैसे भावों को छोड़ देता है और खोपड़ी के स्थान का अनुवाद करता है।

वह यीशु को देने के लिए लोहबान के साथ मिलाई गई तीखी मदिरा को छोड़ देता है, लेकिन वह इस बात पर प्रकाश डालता है कि यीशु इतने सारे प्रत्यक्षदर्शियों की मौजूदगी में क्रूस पर चढ़ा। एक, वहाँ भीड़ थी। भीड़ ने देखा, लेकिन भीड़ ने लूका में उसका मज़ाक नहीं उड़ाया।

शासक मौजूद थे। उन्होंने उसका मज़ाक उड़ाया, और फिर सैनिकों ने उसका मज़ाक उड़ाया। उन्होंने उसे सिरका या खट्टा पेय देने की पेशकश की, अगर आप चाहें, और उन्होंने उसे चिढ़ाते हुए कहा कि क्या वह यहूदियों का राजा है।

और फिर दो अपराधी, उन अपराधियों में से एक, यीशु का मज़ाक उड़ाता है। दूसरा उसे चुप करा देता है, जिस पर यीशु कह रहे हैं कि आज, जिसने उसे यीशु के साथ अपने राज्य में रहने के लिए कहा है, वह स्वर्ग में उसके साथ होगा। उस दिन दो चमत्कार होंगे।

छठे से नौवें घंटे तक सूरज बहुत जल्दी अंधेरा हो जाएगा, और मंदिर का पर्दा फट जाएगा। मुझे यहाँ जल्दी से कुछ कहना है क्योंकि यह विशेष व्याख्यान मेरे द्वारा अब तक दिए गए सभी अन्य व्याख्यानों से लंबा होगा। मैं यहाँ कुछ विवरण रखते हुए संक्षिप्त रहने की कोशिश करूँगा।

सबसे पहले, यीशु के साथ क्रूस पर दो अपराधियों के साथ, यीशु ने कहा कि उस दिन, उन अपराधियों में से एक जिसने स्वीकार किया कि वे जो कुछ भी भुगत रहे थे, उसके वे हकदार थे और यीशु के साथ रहना चाहते थे, यीशु ने कहा, आज तुम मेरे साथ स्वर्ग में रहोगे। हम वास्तव में नहीं जानते कि स्वर्ग का क्या मतलब है क्योंकि यह कुछ ऐसा है जिसे हम परंपरा में उस बगीचे को संदर्भित करने के लिए जानते हैं जो आत्माओं की सहायता करता है, एक ऐसा स्थान जहाँ भगवान अपने लोगों के साथ रहते हैं। कभी-कभी, यह अवधारणात्मक रूप से स्वर्ग का पर्याय है, जो भगवान की उपस्थिति का स्थान है।

इसलिए, जब यह तर्क दिया जाता है कि जब यीशु ने आज कहा, तुम मेरे साथ स्वर्ग में रहोगे, तो क्या वह उसके साथ स्वर्ग जाने की बात कर रहा है? क्या वह किस स्वर्ग की बात कर रहा है? यदि यीशु अंधकार की शक्तियों को हराने के लिए अधोलोक में जाने वाला था, तो आपका जो भी सिद्धांत है, यीशु का क्या मतलब था, क्षमा करें, यीशु का क्या मतलब था? यह एक ऐसा बिंदु है जहाँ मैं चाहूँगा कि आप इस विषय पर और अधिक अध्ययन करें क्योंकि कुछ दृष्टिकोण और कुछ अंतर्दृष्टियाँ हैं जो प्रदान की जाएँगी कि इस तरह का व्याख्यान उस पर विस्तृत चर्चा नहीं कर पाएगा। लेकिन यह जानते हुए कि अन्य देशों में मेरे कुछ मित्र इस विशेष व्याख्यान श्रृंखला का अनुसरण करते हैं, मैं कहना चाहूँगा कि आप में से जो लोग लैटिन भाषी देशों में हैं, उनके लिए पैराडाइसो की अवधारणा स्वर्गीय आनंद की भावना को दर्शाती है जो यीशु ने क्रूस पर इस अपराधी को प्रदान की है। लेकिन स्लाव देशों में रहने वालों, मैं आपको बता दूँ कि यीशु क्या नहीं कह रहे हैं।

और जो लोग हमेशा अंग्रेजी समझते हैं या जो स्लाव भाषा नहीं बोलते हैं, जैसा कि मैं उनमें से कम से कम एक को थोड़ा जानता हूँ, सेबो-क्रोएशियाई-स्लाविक भाषा में, टमाटर के लिए एक शब्द है। टमाटर वास्तव में रोचेस्टर है। रोचेस्टर का इस्तेमाल इन दिनों अक्सर नहीं किया जाता है।

जब मैं ज़मीन पर होता हूँ, तो टमाटर शब्द के बारे में जो ज़्यादा सुनता हूँ वह है स्वर्ग। अब, जैसा कि मुझे मैसेडोनिया, बुल्गारिया और अन्य जैसी अन्य स्लाविक भाषाएँ भी मिलती हैं, आप टमाटर को स्वर्ग कह सकते हैं। जैसा कि प्रेम सेब की अभिव्यक्ति में है।

लेकिन यीशु उन बढ़िया टमाटरों के बारे में बात नहीं कर रहे हैं जिन्हें आप लहसुन के साथ अपनी ताज़ी रोटी खाना चाहते हैं जैसा कि हम सुबह में करने की कोशिश करते हैं। नहीं, नहीं, नहीं, यीशु यहाँ उस बारे में बात नहीं कर रहे हैं। हाँ, यह क्रूस पर अपराधी को एक बढ़िया टमाटर देने की बात नहीं है।

वह भगवान के साथ एक जगह की पेशकश कर रहा है। मैंने सोचा कि मुझे इसे स्पष्ट करना चाहिए। यदि संभव हो, और आप इस पर चर्चा कर रहे हैं, तो टमाटर के लिए रोचेस्टर का उपयोग करें, न कि स्वर्ग के लिए।

क्योंकि प्रेम सेब अच्छा लगेगा, लेकिन यीशु का मुद्दा ईश्वर के साथ एक स्थान, ईश्वर के आनंद का स्थान है। पर्दा फट जाएगा। पर्दा क्यों है, इस बारे में तीन दृष्टिकोण सामने आते हैं।

कुछ लोगों का सुझाव है कि जब हम मंदिर में पर्दा फटने या घूँघट फटने के बारे में पढ़ते हैं, तो इसे मंदिर के आसन्न विनाश के प्रतीक के रूप में समझा जाना चाहिए। कुछ लोगों ने यह भी सुझाव दिया है कि यह पुरानी वाचा और उसके अनुष्ठान बलिदानों के अंत का प्रतीक है, और पर्दा हटाने से वास्तव में नई वाचा के प्रभावी होने का रास्ता खुल जाता है। दूसरों ने एक तीसरा दृष्टिकोण सुझाया है जो कहता है कि यह यहूदियों और अन्यजातियों के लिए समान पहुँच के उद्घाटन को संदर्भित करता है, जहाँ अन्यजातियों के दरबार और यहूदियों के दरबार के बीच का पर्दा मिट जाता है, और लोगों की पहुँच ईश्वर तक होती है।

पसंदीदा दृष्टिकोण क्या है? मुझे नहीं पता, लेकिन मैं आपको तीन दृष्टिकोण प्रस्तुत करता हूँ जो अक्सर सामने आते हैं क्योंकि मुझे लगता है कि आप जानना चाहेंगे। जैसा कि जॉय ग्रीन कहते हैं, जब वे इस विशेष घटना और यीशु की मृत्यु के दिन होने वाली घटनाओं के बारे में सोचते हैं, तो वे कहते हैं, मंदिर के पर्दे के फटने के चित्र को मंदिर के चारों ओर और मंदिर से निकलने वाली प्रतीकात्मक दुनिया के विनाश के प्रतीक के रूप में देखें, जो यीशु के अनुयायियों के केन्द्रापसारक मिशन की तैयारी में मंदिर की केंद्रीयता को बेअसर कर देता है, यरूशलेम की ओर नहीं बल्कि उससे, और पृथ्वी के छोर तक। दूसरे शब्दों में, जब मंदिर को तोड़ा जाता है, तो यरूशलेम के आसपास के सभी अनुष्ठान और धर्म के वैचारिक ढांचे खुल जाते हैं।

राज्य की उन्नति यरूशलेम से शुरू होती है और वहीं से आगे बढ़ती है। क्रूस पर चढ़ाए जाने पर चर्चा के लिए मैं एक और बात सामने लाना चाहता हूँ, वह यह है कि यीशु के क्रूस पर एक शिलालेख लगाया गया था। वह शिलालेख क्या था? फिर से, बाइबल शिक्षकों और बाइबल छात्रों के लिए, मैं आपको और अधिक खोज करने के लिए एक असाइनमेंट देता हूँ क्योंकि प्रत्येक सुसमाचार लेखक हमें बताता है कि शिलालेख थोड़ा अलग था।

जॉन कहते हैं कि शिलालेख पर लिखा है कि नासरत का यीशु, यहूदियों का राजा। मार्क कहते हैं कि शिलालेख पर लिखा है कि यहूदियों का राजा। मैथ्यू कहते हैं कि शिलालेख पर लिखा है कि यह यीशु है, यहूदियों का राजा।

और लूका का कहना है कि शिलालेख में लिखा है कि यह यहूदियों का राजा है। लेकिन ऐसा शिलालेख क्यों ज़रूरी है? विद्वान इस बारे में अटकलें लगाते हैं, लेकिन पिलातुस ऐसा शिलालेख क्यों बनवाना चाहता था, इसके बारे में तीन सुझाव दिए गए हैं। पहला दृष्टिकोण यह है कि पिलातुस उन संभावित आरोपों को रोकना चाहता था कि वह यहूदियों के दबाव और मांगों के आगे आसानी से झुक सकता है।

इसलिए, उस शिलालेख को वहां रखना स्पष्ट रूप से स्थापित करना है कि वह वास्तव में कोई ऐसा व्यक्ति है जो न्याय के लिए खड़ा है और यहूदियों की ओर से न्याय प्रदान करता है। दूसरा दृष्टिकोण कहता है कि यह एक उपहास है, विशेष रूप से यहूदियों और यहूदी नेताओं को खुश करने के लिए क्रूस पर चढ़ाए जाने की जगह को देखते हुए। जब लोग मुख्य सड़क से गुजरते हैं, तो वे शिलालेख देखते हैं, और वे कहते हैं कि हाँ, यह वही व्यक्ति है जिसने यहूदियों का राजा होने का दावा किया था। तीसरा दृष्टिकोण जो अधिक से अधिक विद्वानों का मानना है, वह यह है कि शिलालेख उन लोगों के लिए एक निवारक के रूप में काम करने के लिए था जो साम्राज्य के खिलाफ क्रांति करना चाहते हैं, जब भी वे इसे देखते हैं, यह उन्हें याद दिलाएगा कि यदि वे रोमन व्यवस्था के खिलाफ कोई तख्तापलट करते हैं, तो वे भी क्रूस पर चढ़ जाएंगे।

इनमें से कौन सा दृष्टिकोण सबसे अच्छा है? उत्तर मुझे नहीं पता। मैं आपको यह याद दिलाने के लिए इस दृष्टिकोण का कुछ हिस्सा आगे लाता हूँ कि विद्वान उन चीज़ों को समझने की कोशिश कर रहे हैं जिनके बारे में हमारे पास बहुत सारे तथ्य नहीं हैं। हम जानते हैं कि शिलालेख आंशिक रूप से इसलिए दिया गया था क्योंकि यीशु के खिलाफ लगाए गए आरोपों का एक हिस्सा, हालांकि निराधार है, शिलालेख में परिलक्षित होता है।

शायद यही कारण है कि यीशु क्रूस पर क्यों हैं। उस क्रूस पर क्यों? यीशु सेवक हैं। वे अपने अज्ञानी हत्यारों के लिए प्रार्थना करते हैं।

वह अपने हत्यारों के लिए क्षमा चाहता है। वह एक अपराधी के लिए स्वर्ग में जगह भी प्रदान करता है। वह अपनी आत्मा को पिता के पास भेजने का आदेश देता है।

और जैसा कि जॉन ग्रीन कहते हैं, धरती पर यीशु के इन आखिरी दिनों में, मृत्युदंड के साधन के रूप में, उन्हें सूली पर चढ़ाए जाने के इस भयानक अनुभव से गुजरना होगा। ग्रीन के अनुसार, सूली पर चढ़ाया जाना विशेष रूप से जघन्य था। इसका उतना ही संबंध सूली पर चढ़ाए जाने के साथ होने वाले सार्वजनिक अपमान से है जितना कि इस कृत्य से।

वह लिखते हैं कि किसी खंभे से बांधकर या कीलों से ठोंककर मारा गया। पेड़ या क्रॉस पर लटकाए जाने पर पीड़ित के सभी अंग सुरक्षित रहते हैं और अपेक्षाकृत कम रक्त की हानि होती है। परिणामस्वरूप, मृत्यु धीरे-धीरे होती है, कभी-कभी कई दिनों तक, क्योंकि शरीर किसी झटके या दम घुटने के कारण दम तोड़ देता है।

हमें बताया जाएगा कि यीशु, जो मर गया था, फिर से जी उठेगा। हम इन गवाहों को न केवल उसके पुनरुत्थान में बल्कि उसके क्रूस पर चढ़ने में भी देखेंगे। लूका हमें याद दिलाएगा कि यीशु की मृत्यु में, यहाँ तक कि घटना की अध्यक्षता करने वाला सूबेदार भी परमेश्वर की स्तुति करेगा और कहेगा कि यह आदमी निश्चित रूप से निर्दोष है।

लूका हमें याद दिलाएगा कि वहाँ एक भीड़ होगी जो दृश्य पर इकट्ठा होगी, और जब बादल देखेंगे कि क्या हो रहा है, तो वे अपनी छाती पीटेंगे। वे देखेंगे कि क्या हो रहा है और परेशान हो जाएँगे। लूका हमें याद दिलाएगा कि दृश्य में महिलाएँ भी होंगी, और महिलाएँ जो हो रहा है उसकी प्रत्यक्षदर्शी होंगी, और वे खुद से कहेंगी कि उनके लिए कुछ तैयार करना महत्वपूर्ण है, बाद में, आकर शरीर का अभिषेक करने के लिए शरीर का सम्मान करना।

और फिर भी लूका हमें बताएगा कि दृश्य में, एक ऐसा व्यक्ति होगा जिसके बारे में हम सभी को श्लोक 50 से बहुत अच्छी तरह से जानना चाहिए, जिसका नाम अरिमथिया का यूसुफ था। अब, यहूदी शहर अरिमथिया से यूसुफ नाम का एक आदमी था। वह परिषद का सदस्य था, एक अच्छा और धर्मी व्यक्ति जिसने उनके निर्णय और कार्रवाई के निर्णय पर सहमति नहीं जताई थी, और वह परमेश्वर के राज्य की तलाश कर रहा था।

वह आदमी पिलातुस के पास गया और यीशु के शरीर के लिए कहा। फिर, उसने उसे नीचे उतारा, उसे एक सनी के कफन में लपेटा, और उसे पत्थर में काटे गए एक मकबरे में रख दिया, जहाँ कभी किसी को नहीं रखा गया था। इस दृश्य में मेरे पास चार प्रमुख गवाह हैं। और दोस्तों, जैसा कि आप इस विशेष व्याख्यान का अनुसरण करते हैं, मुझे यहाँ रुककर हस्तक्षेप करने की अनुमति है।

मैं आपसे आग्रह करता हूँ कि जब मैं इस विशेष दृश्य पर ध्यान केंद्रित करूँ तो मेरे साथ धैर्य रखें क्योंकि मैं यह सुनिश्चित करना चाहता हूँ कि मैं यीशु की मृत्यु को एक सामूहिक रूप से कवर करूँ, और यह हमारे सामान्य व्याख्यानों से थोड़ा लंबा हो जाएगा, लेकिन यह लूका में एक बहुत ही महत्वपूर्ण कहानी है जिसे मैं विभाजित नहीं कर सकता। अरिमथिया का यूसुफ कौन है? लूका हमें याद दिलाता है कि वह यहूदी परिषद, सैन्हेद्रिन का सदस्य था, जो यीशु को पिलातुस के पास ले गई थी, और लूका ने हमें यह बताने में सावधानी बरती कि वह सैन्हेद्रिन के निर्णय या कार्रवाई से सहमत नहीं था। वह एक अलग व्यक्ति था।

वह यीशु का एक शिष्य था जो दर्शकों की भीड़ में सार्वजनिक रूप से अलग-थलग रहने के लिए तैयार था। लूका हमें यह भी बताता है कि वह एक अच्छा आदमी और धर्मी था। न केवल वह महासभा से असहमत था, बल्कि लूका ने कहा कि वह एक शिष्य था जो राज्य के आने का इंतजार कर रहा था, अन्य सुसमाचारों के विपरीत जो हमें बताते हैं कि अरिमथिया का यह व्यक्ति यूसुफ लूका में एक गुप्त शिष्य की तरह था, वह यीशु का एक खुला शिष्य था जो परमेश्वर के राज्य के आने का इंतजार कर रहा था।

अपने प्रभाव का इस्तेमाल करते हुए, उसने पिलातुस से यीशु के शरीर को सुरक्षित रखने के लिए प्रार्थना की, शरीर को लिनन में लपेटा, और उसे एक बिल्कुल नई कब्र में दफना दिया। यीशु की गिरफ्तारी और सूली पर चढ़ाए जाने के इस विशेष सत्र के अंत में, मैं आपको इस महत्वपूर्ण दिन और घटना के बारे में याद दिलाना चाहता हूँ। यीशु को कब्र में रखा जाएगा।

जोसेफ इसके लिए जिम्मेदार होगा। लेकिन मुझे आपको यहाँ होने वाली कुछ चीज़ों के बारे में और भी बताना होगा। जब किसी को सूली पर चढ़ाया जाता है, तो आमतौर पर, शव को वहाँ रखा जाता है जब तक कि बाद में उसे किसी सामूहिक कब्र या घाटी में नहीं ले जाया जाता।

यहाँ कुछ हो रहा है। यीशु की मृत्यु के साथ, उसे सबसे अच्छा व्यवहार दिया जाएगा जिसके बारे में आप सोच सकते हैं। जब शमौन को शव मिला तो उसने उसे लिनन के एक मूल्यवान वस्त्र में लपेटा ताकि यह कह सके कि मैं इस शरीर का सम्मान के साथ इलाज कर रहा हूँ।

ल्यूक ने हमें बताया कि घटनास्थल पर कुछ महिलाएं थीं जो शव के लिए विशेष मरहम तैयार करना चाहती थीं। ऐसा उन लोगों के साथ नहीं होता जिन्हें सूली पर चढ़ाया जाता है। दूसरी बात जो आपको ध्यान में रखनी चाहिए वह यह है कि आमतौर पर सूली पर चढ़ाए जाने वाले लोगों के साथ ऐसा नहीं होता कि उन्हें कब्र में रखा जाए, बिलकुल नई कब्र की तो बात ही छोड़िए।

जैसा कि मैंने पहले बताया, क्रूस पर चढ़ाए गए व्यक्ति के शरीर को आम तौर पर एक आम कब्र में फेंक दिया जाता है और वहीं छोड़ दिया जाता है। लेकिन यहाँ, एक कब्र जिसका उपयोग नहीं किया जाता है, वह परिवार में प्रमुख स्थिति का प्रतीक है। इस कब्र का उपयोग यीशु को दफनाने के लिए किया जाएगा।

आम तौर पर, परिवार का कोई प्रतिष्ठित मुखिया अपने लिए इस तरह की कब्र खुदवाता है, और फिर जब वे मरने के बाद खुद कब्र खुदवाते हैं, तो उन्हें वहीं दफनाया जाता है। बाद में उनकी अस्थियाँ इकट्ठी की जाती हैं, और फिर परिवार के बाद के सदस्यों को वहाँ दफनाया जाता है और कभी-कभी कब्र का नाम भी उस परिवार के मुखिया के नाम पर रखा जाता है जिसने वह कब्र बनवाई थी। एक कब्र जिसमें कोई नहीं रहता है, वह वह जगह होगी जहाँ यीशु लेटे होंगे। कब्र के बारे में कुछ बातें।

सबसे पहले, यीशु को छह फीट नीचे नहीं दफनाया गया था। जैसा कि मैंने आपको स्क्रीन पर दिखाया, कब्र को एक चट्टान में उकेरा जाएगा, और ल्यूक के वर्णन से हमें पता चलता है कि यह लगभग दो-कक्षीय कब्र है और जब वे ऐसा करते हैं, तो वे कब्र के हिस्से के रूप में मंच स्थापित करेंगे, वे पत्थर के मंच बनाएंगे और इन पत्थर के प्लेटफार्मों को रेत से ढक दिया जाएगा और आमतौर पर शरीर को एक साल या उससे अधिक समय तक रेत से ढके पत्थर के मंच पर रखा जाएगा जब शरीर सड़ जाएगा और फिर वे शरीर को इकट्ठा करेंगे और उसे किनारे पर रख देंगे। वह एक कब्र तब एक ऐसी जगह हो सकती है जहाँ पूरा परिवार आराम करेगा।

यीशु कब्र में जाने वाले पहले व्यक्ति बन गए, इसलिए जब हम पुनरुत्थान की कहानी के बारे में पढ़ते हैं, तो ऐसा नहीं लगता कि कब्र में कोई और था और कब्र में पहले कुछ और हुआ था। यह एक बिलकुल नई कब्र है, और जो कुछ भी हो रहा है वह इस यीशु और सिर्फ यीशु के साथ हो

रहा है। दूसरी बात जो आपको प्राचीन दफन के बारे में जाननी चाहिए वह यह है कि यीशु का शरीर रेत से ढका नहीं होगा।

जैसा कि मैंने बताया, कब्र में रेत से ढका पत्थर का मंच ही वह स्थान है जिस पर शव को रखा जाएगा, इसलिए जब शरीर से तरल पदार्थ सड़ता है, तो वह पत्थर के मंच पर रेत में जम जाता है, और फिर एक साल बाद जब वे आते हैं, तो हड्डियों और जो कुछ भी आप लेते हैं उसे अस्थि-कक्ष में रखना सही होगा। ध्यान देने वाली दूसरी बात यह है कि रस्सी ने उसे शाही दर्जा दिया था, लेकिन आपको पता होना चाहिए कि पुनरुत्थान के बाद, यीशु ने उस शिक्षा को अपने साथ ले जाने से इनकार कर दिया। महिला आएगी और उस शिक्षा का सबूत देखेगी, और यीशु चला जाएगा।

मुझे पसंद आया कि क्रूस पर चढ़ाए जाने वाले स्थान या कब्र का वर्णन जोएल ग्रीन ने कैसे किया, और मैं इस व्याख्यान को जल्द ही समाप्त करूँगा। ल्यूक द्वारा कल्पना की गई कब्र, जैसा कि मैंने रोजर ग्रीन कहा, मेरा मतलब जोएल ग्रीन से है। जैसा कि ग्रीन कहते हैं, ल्यूक के विवरण द्वारा कल्पना की गई कब्र को एक चट्टान के किनारे पर उत्खनन करके बनाया गया था जैसे कि एक कब्र में गुफा से पहले एक प्रांगण शामिल हो सकता है, जिसके मुँह को एक बड़े डिस्क के आकार के पत्थर से ढका जा सकता है जो उसके नीचे चट्टान में काटे गए खाँचे में लगा हो।

प्रवेश द्वार अवरोधक कक्ष में ले जाएगा जिसमें पत्थर की सीढ़ी और पर्याप्त ऊंचाई का केंद्रीय गड्ढा होगा ताकि लोग खड़े होकर कक्ष के किनारे चट्टान में खुदी हुई पत्थर की बेंचों में से एक में शव को दफनाने के लिए तैयार हो सकें। जोसेफ के पास इस तरह की कब्र का स्पष्ट स्वामित्व था, जैसा कि यरूशलेम परिषद में उनकी सदस्यता से प्रमाणित होता है, यह उनकी कुलीन स्थिति का संकेत है। यीशु क्रूस पर मरे, जो ल्यूक की कथा में एक प्रमुख मील का पत्थर है, लेकिन यीशु को गवाहों के साथ भी दफनाया गया था जो देख रहे थे कि क्या हो रहा था।

अन्य सुसमाचारों के विपरीत, उन्हें कब्र पर सील नहीं किया जाएगा। ल्यूक को नहीं लगता कि यह महत्वपूर्ण है, लेकिन चलो एक मिनट रुकते हैं, और मैं समाप्त करता हूँ। उसने मृत्यु के योग्य होने के लिए क्या किया? हम अध्याय 19 के अंत में जानते हैं, जब वह यरूशलेम आया, तो वह मंदिर गया, मंदिर को साफ किया, और मंदिर को शिक्षण के स्थान के रूप में उपयोग करना शुरू कर दिया।

हम जानते हैं कि अध्याय 20 में उसने बहुत से लोगों को भड़काया जब उसने मंदिर में यहूदी अधिकारियों से उलझकर उस स्थान के अधिकार को चुनौती दी। लूका हमें बताता है कि भीड़ ने यीशु को धोखा नहीं दिया और न ही उसका उपहास किया, बल्कि अधिकारियों ने ही उसे गिरफ्तार किया और महायाजक के घर से लेकर महासभा तक उसका मुकदमा चलाया। महासभा तब भी बहुत परेशान थी जब उनके खिलाफ कोई आरोप नहीं था।

वे एक साथ आए और उसे पिलातुस के सामने पेश किया, मानो कह रहे हों कि तुम्हें इस बारे में कुछ करना चाहिए। पिलातुस ने तीन बार कहा कि मुझे इस आदमी में कोई दोष नहीं मिला। वे कहते हैं कि उसे सूली पर चढ़ा दो, उसे सूली पर चढ़ा दो।

पिलातुस ने कहा कि उसे ले जाओ और क्रूस पर चढ़ाओ, जैसे मैं तुम्हारे लिए बरअब्बा को रिहा करता हूँ। उसे क्रूस पर चढ़ाया गया। उसे अपराधियों के बीच क्रूस पर चढ़ाया गया, जैसे कि वह कोई अपराधी हो।

उसने ऐसा क्यों किया? वह तुम्हारे और मेरे लिए गया। ल्यूक की कहानी लगभग यह बताती है कि उसे उस जगह पर ले जाया गया था, जिसे स्कल कहा जाता है, जहाँ उसे उन अपराधियों के साथ सूली पर चढ़ाया जाना था, जो अपने क्रॉस लेकर उस दिशा में मार्च कर रहे थे। उसे अपराधियों के साथ क्यों जाना चाहिए? ओह, क्योंकि शायद तुम और मैं वहाँ होने के हकदार थे, और उसने हमारी जगह ले ली।

यीशु हमारे लिए क्रूस पर चढ़ गया। वह निर्दोष मरा। पिलातुस को उसमें कोई दोष नहीं मिला।

हेरोल्ड को उसमें कोई दोष नहीं मिला। क्रूस पर लटका चोर कहता है कि हम अपने भाग्य के हकदार थे, लेकिन यह आदमी नहीं। सेंचुरियन ने कहा कि यह आदमी एक निर्दोष आदमी है।

हाँ, वह निर्दोष था। वह आपके और मेरे लिए मरा। यह ईसाई सुसमाचार का मूल है।

जैसा कि आपने इस श्रृंखला में सबसे लंबे व्याख्यान को सुना, शायद डेढ़ घंटे या उससे भी ज्यादा, मैं आपको याद दिलाना चाहता हूँ कि यीशु ने आपके और मेरे लिए यह सब सहा। अगर हम उसे प्रभु और व्यक्तिगत उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करेंगे, अगर हम स्वीकार करेंगे कि उसने हमारे बदले में यह किया और हमारे पापों का पश्चाताप करेंगे तो वह हमें क्षमा कर देगा। वह हमें उस चोर की तरह, उस अपराधी को क्रूस पर चढ़ाने जैसा स्थान देगा।

वह हमें अपने साथ रहने के लिए एक जगह देगा। मुझे एक बहुत पुराना भजन याद है जिसमें कहा गया है कि मैं यीशु को सब कुछ सौंपता हूँ; जब भी मैं उस भजन के बारे में सोचता हूँ, तो मुझे अपनी कमज़ोरियों, अपने पापों और अपनी कमियों की याद आती है।

और क्यों यीशु मेरे लिए मरने आए और क्यों मुझे उनके सामने समर्पण करना चाहिए। मेरी आशा और मेरी प्रार्थना है कि आप निश्चित हैं कि आप भी मेरी तरह पापी हैं। कि आप निश्चित हैं कि वह आपके और मेरे लिए क्रूस पर मरा।

और आप निश्चित हैं कि उस पर विश्वास करके, आप भी उद्धार पा सकते हैं जैसा कि मैंने पाया है और जैसा कि मैं ईमानदारी से चलने का प्रयास जारी रखता हूँ। जब हम ऐसा करते हैं, तो हमें यह भी याद रखना चाहिए कि हम कष्टों से गुज़र सकते हैं क्योंकि यह भी यीशु के साथ चलने का एक हिस्सा है। हम इससे मुक्त नहीं हैं।

ईश्वर आपको इस व्याख्यान श्रृंखला में हमारा अनुसरण करने के लिए आशीर्वाद दे। और मैं आशा करता हूँ और प्रार्थना करता हूँ कि इस समय, आपने यीशु को अपने जीवन का प्रभु बनने दिया है, और आप एक ऐसे शिष्यत्व के लिए प्रतिबद्ध हैं जो उसका अनुसरण करेगा, भले ही इसका अर्थ मृत्यु हो, क्रूस पर मृत्यु। धन्यवाद और ईश्वर आपको आशीर्वाद दे।

यह डॉ. डैनियल के. डार्को द्वारा लूका के सुसमाचार पर दिए गए उपदेश हैं। यह सत्र 33, गिरफ्तारी और क्रूस पर चढ़ना, लूका 23 है।